षेज् आरति

षेज् आरति

ओवाळूँ आरती माझ्या सद्गुरुनाथा माझा सायिनाथा |
पाचाही तत्त्वांचा दीप लाविला आताँ | |

निर्गुणाची स्थिती कैसी आकारा आली | बाबा आकारा आली |
सर्वाँ घटीँ भरूनि उरली सायी माऊली | |
ओवाळूँ आरती माझ्या सद्गुरुनाथा माझा सायिनाथा |
पाचाही तत्त्वांचा दीप लाविला आताँ | | 1 | |

रज तम सत्व तिघे माया प्रसवली | बाबा माया प्रसवली |
मायेचिये पोटीँ कैसी माया उद्भवली | |
ओवाळूँ आरती माझ्या सद्गुरुनाथा माझा सायिनाथा |
पाचाही तत्त्वांचा दीप लाविला आताँ | | 2 | |

सप्तसागरीँ कैसा खेळ मांडिला | बाबा खेळ मांडिला |
खेळूनीया खेळ अवघा विस्तार केळा | |
ओवाळूँ आरती माझ्या सद्गुरुनाथा माझा सायिनाथा |
पाचाही तत्त्वांचा दीप लाविला आताँ | | 4 | |

ब्रह्मांडीची रचना कैसी दाखविली डोलाँ | बाबा दाखविली डोलाँ |
तुका म्हणे माझा स्वामी कृपाळू भोळा | |
ओवाळूँ आरती माझ्या सद्गुरुनाथा माझा सायिनाथा |
पाचाही तत्त्वांचा दीप लाविला आताँ | | 4 | |

– 2। आरती ज्ञानरायाची –

आरती ज्ञानराजा | महाकैवल्यतेजा |
सेविती साधुसंत | मनु वेधला माझा |
आरती ज्ञानराजा | |

लोपलेँ ज्ञान जगीँ | हित नेणती कोणी |
अवतार पांडुरंग | नाम ठेविलेँ ज्ञानी | | 1 | |

आरती ज्ञानराजा | महाकैवल्यतेजा |
सेविती साधुसंत | मनु वेधला माझा |
आरती ज्ञानराजा ||

कनकाचे ताट करीँ | उभ्या गोपिका नारी |
नारद तुंबरहो | सामगायन करी || 2 ||

आरती ज्ञानराजा | महाकैवल्यतेजा |
सेविती साधुसंत | मनु वेधला माझा |
आरती ज्ञानराजा ||

प्रगट गुह्य बोले | विश्व ब्रह्मचि केले |
रामजनार्दनीँ | पायी मस्तक ठेविलेँ || 3 ||

आरती ज्ञानराजा | महाकैवल्यतेजा |
सेविती साधुसंत | मनु वेधला माझा |
आरती ज्ञानराजा ||

– 3। आरती तुकारामाची –

आरती तुकारामा | स्वामी सद्गुरुधामा |
सच्चिदानंदमूर्ती | पाय दाखवीँ आम्हाँ ||
आरती तुकारामा ||

राघवेँ सागराँता | (जैसे) पाषाण तारीलेँ |
तैसे (हे) तुकोबाचे | अभंग (उदकी) रक्षिलेँ || 1 ||

आरती तुकारामा | स्वामी सद्गुरुधामा |
सच्चिदानंदमूर्ती | पाय दाखवीँ आम्हाँ ||
आरती तुकारामा ||

तुकिता तुलनेसी | ब्रह्म तुकासी आलेँ |
म्हणोनी रामेश्वरेँ | चरणीँ मस्तक ठेविलेँ || 2 ||

आरती तुकारामा | स्वामी सद्गुरुधामा |
सच्चिदानंदमूर्ती | पाय दाखवीँ आम्हाँ ||
आरती तुकारामा ||

– 4। जय जय सायीनाथ –

जय जय सायिनाथ आताँ पहुडावेँ मंदिरीँ हो | (* 2 *)
आळवितो सप्रेमेँ तुजला आरति घेउनि करीँ हो |
जय जय सायिनाथ आताँ पहुडावेँ मंदिरीँ हो ||

रंजविसी तू मधुर बोलुनी माय जशी निज मुला हो | (* 2 *)
भोगिसि व्याधी तूँच हरूनिया निजसेवकदुःखाला हो | (* 2 *)
धाँवुनि भक्तव्यसन हरिसी दर्शन देसी त्याला हो | (* 2 *)
झाले असतील कष्ट अतिशय तुमचे या देहाला हो || 1 ||

जय जय सायिनाथ आताँ पहुडावेँ मंदिरीँ हो |
आळवितो सप्रेमेँ तुजला आरति घेउनि करीँ हो |
जय जय सायिनाथ आताँ पहुडावेँ मंदिरीँ हो ||

क्षमा शयन सुंदर ही शोभा सुमनशेज त्यावरी हो | (* 2 *)
घ्यावी थोडी भक्तजनांची पूजनादि चाकरी हो | (* 2 *)
ओवाळितोँ पंचप्राण ज्योति सुमती करीँ हो | (* 2 *)
सेवा किंकर भक्त प्रीती अत्तर परिमळ वारी हो || 2 ||

जय जय सायिनाथ आताँ पहुडावेँ मंदिरीँ हो |
आळवितो सप्रेमेँ तुजला आरति घेउनि करीँ हो |
जय जय सायिनाथ आताँ पहुडावेँ मंदिरीँ हो ||

सोडुनि जाया दुःख वाटतेँ बाबांचा चरणाँसी हो |
सोडुनि जाया दुःख वाटतेँ सयींचा चरणाँसी हो |
आज्ञेस्तव हा आशीर्प्रसाद घेउनि निजसदनासी हो | (* 2 *)
जातोँ आताँ येउँ पुनरपि त्वच्चरणांचे पाशीँ हो | (* 2 *)
उठवू तुजला सायिमाउले निजहित साधायासी हो || 3 ||

जय जय सायिनाथ आताँ पहुडावेँ मंदिरीँ हो |
आळवितो सप्रेमेँ तुजला आरति घेउनि करीँ हो |
जय जय सायिनाथ आताँ पहुडावेँ मंदिरीँ हो ||

– 5। आताँ स्वामी –

आताँ स्वामी सुखेँ निद्रा करा अवधूता |
बाबा करा सायिनाथा |
चिन्मय हेँ सुखधामा जाउनि पहुडा एकांता ||

वैराग्याचा कुंचा घेउनि चौक झाडीला |
बाबा चौक झाडीला |
तयावरी सुप्रेमाचा शिडकावा दिधला ||
आताँ स्वामी सुखेँ निद्रा करा अवधूता |
बाबा करा सायिनाथा |
चिन्मय हेँ सुखधामा जाउनि पहुडा एकांता || 1 ||

पायघड्या घातल्या सुंदर नवविधा भक्ति |
बाबा नवविधा भक्ती |
ज्ञानांच्या समया लावुनि उजलळ्या ज्योती ||
आताँ स्वामी सुखेँ निद्रा करा अवधूता |
बाबा करा सायिनाथा |
चिन्मय हेँ सुखधामा जाउनि पहुडा एकांता || 2 ||

भावार्थाचा मंचक हृदयाकाशी टांगिला |
हृदयाकाशीँ टांगिला |
मनाची सुमने करूनि केलेँ शेजेला ||
आताँ स्वामी सुखेँ निद्रा करा अवधूता |
बाबा करा सायिनाथा |
चिन्मय हेँ सुखधामा जाउनि पहुडा एकांता || 3 ||

द्वैताँचे कपाट लावुनि एकत्र केलें |
बाबा एकत्र केलें |
दुर्बुद्धीच्या गाँठी सोडूनि पडदे सोडिले ||
आताँ स्वामी सुखेँ निद्रा करा अवधूता |
बाबा करा सायिनाथा |
चिन्मय हेँ सुखधामा जाउनि पहुडा एकांता || 4 ||

आशा तृष्णा कल्पनेचा साँडुनि गलबला |
बाबा साँडुनि गलबला |
दया क्षमा शांति दासी उभ्या सेवेला ||
आताँ स्वामी सुखेँ निद्रा करा अवधूता |
बाबा करा सायिनाथा |
चिन्मय हेँ सुखधामा जाउनि पहुडा एकांता || 5 ||

अलक्ष्य उन्मनी घेउनी (बाबा) नाजुक दुशाला |
बाबा नाजुक दुशाला |
निरंजन सद्गुरु स्वामी निजे शेजेला || (भेदः-निजविल)
आताँ स्वामी सुखेँ निद्रा करा अवधूता |
बाबा करा सायिनाथा |
चिन्मय हेँ सुखधामा जाउनि पहुडा एकांता || 6 ||

सद्गुरु सायिनाथ् महराज् की जै ||
श्रीगुरुदेव दत्त ||

– 6। प्रसाद मिळण्याकरितां –

पाहेँ प्रसादाची वाट | द्यावेँ धुवोनिँया ताट |
शेष घेउनी जायीन | तुमचेँ झालिया भोजन || 1 ||

झालोँ एकसवा | तुम्हा आळवोनीया देवा |
शेष घेउनी जायीन | तुमचेँ झालिया भोजन || 2 ||

तुका म्हणे चित्ता | करूनि राहिलो निवांत |
शेष घेउनी जायीन | तुमचेँ झालिया भोजन || 3 ||

– 7। प्रसाद मिळाल्यावर –

पावला प्रसाद आताँ विठोँ निजावेँ |
बाबा आता निजावे |
आपुला तो श्रम कळोँ येतसे भावेँ ||
आताँ स्वामी सुखेँ निद्रा करा गोपाळा |
बाबा सायी दयाळा |
पुरले मनोरथ जातो आपुले स्थळा || 1 ||

तुम्हाँसी जागवूँ आम्ही आपुल्या चाडा |
बाबा आपुल्या चाडा |
शुभाशुभ कर्मे दोष हरावया पीडा ||
आताँ स्वामी सुखेँ निद्रा करा गोपाळा |
बाबा सायी दयाळा |
पुरले मनोरथ जातो अपुले स्थळा || 2 ||

तुका म्हणे दिधिलेँ उच्छिष्टाँचे भोजन |
उच्छिष्टाँचे भोजन |
नाहीँ निवडिलेँ आम्हां आपुल्या भिन्न ||
आताँ स्वामी सुखेँ निद्रा करा गोपाळा |
बाबा सायी दयाळा |
पुरले मनोरथ जातो अपुले स्थळा || 3 ||

सद्गुरु सायीनाथ् महराज् की जै ||

राजाधिराज योगिराज परब्रह्म सायिनाथ् महाराज्
श्रीसच्चिदानंद सद्गुरु सायिनाथ् महराज् की जै ||